REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 6 | MARCH - 2024

भारत के समग्र विकास में कृषि की भूमिका

डॉ. राजेश सिंह कुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर, भारतीय जन संचार संस्थान पश्चिम क्षेत्रीय परिसर, अमरावती.

शोध सार(Absract)

मानव जीवन में विकास एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है और यह व्यक्ति एवं समाज को नवीनता के साथ गतिशीलता प्रदान करती है। मूलतः विकास का अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की मूलभूत जरूरतें रोटी, कपड़ा और मकान की पर्याप्त पूर्ति से है। जन-जन के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन ही विकास है। लोगों की खुशहाली एवं समृद्धि से ही देश के विकास का मापन होता है। विकास प्रक्रिया में केवल आर्थिक ढांचे में ही परिवर्तन नहीं होता है बल्कि उसका अंतर्सम्बन्ध पूरे सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिपे्रक्ष्य से जुड़ा होता है।

वर्तमान में कृषि भारत के लगभग दो तिहाई कार्यबल के लिए आजीविका का साधन है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड है। देश के जीडीपी में लगभग 22 फीसदी का योगदान कृषि का है जबकि देश के समग्र कार्यबल का लगभग 65 फीसदी कृषि क्षेत्र में लगा है। आजादी के समय कृषि क्षेत्र से प्राप्त राजस्व आज के राजस्व के अपेक्षा काफी कम था। आजादी के बाद भारतीय राजस्व में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी का मुख्य कारण कृषि उत्पादन में वृद्धि है जो हरित क्रांति की वजह से संभव हुआ है। सत्तर के दशक की हरित क्रांति खेती, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करने, उन्नत गुणवत्ता वाले बीजों को प्रदान करने, खेती की तकनीकों एवं पौध संरक्षण में सुधार करने के अंतर्गत अतिरिक्त क्षेत्रों को लाने के लिए उत्तरदायी थी। इसी का प्रतिफल रहा कि भारत अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बना और गांवों में रहने वाली दो तिहाई जनसंख्या के रहन-सहन व खान-पान में सुधार हुआ। आजकल नई तकनीकों के विकास के साथ कृषि प्रविधियों में प्रतिदिन परिवर्तन हो रहा है। नूतन प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग करने के लिए कृषकों को अनवरत शिक्षण-प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है।

प्रमुख बिन्दुःविकास, सतत विकास, कृषि, हरित क्रांति, आत्मनिर्भर।

प्रस्तावनाः

मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव से ही विकास का उद्बोधन प्रयोजित है। समय के साथ विकास के कारक परिवर्तित एवं परिवर्धित होते रहते हैं। विकास एक सतत प्रक्रिया है और यह व्यक्ति एवं समाज को नवीनता के साथ गतिशील बनाती है। मूलतः विकास का अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की मूलभूत जरूरतें रोटी, कपड़ा और मकान की पर्याप्त पूर्ति से है। जन-जन के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन ही विकास है। लोगों की खुशहाली एवं समृद्धि से ही देश के विकास का मापन होता है। विकास प्रक्रिया में केवल आर्थिक ढांचे में ही परिवर्तन नहीं होता है बल्कि उसका अंतर्सम्बन्ध पूरे सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिपेरक्ष्य से जुड़ा होता है।

आदिकाल से कृषि हमारी समृद्धि का स्रोत और हमारी अर्थव्यवस्था का मूल आधार रही है। कृषि की प्रधानता के कारण अधिसंख्य लोगों की आजीविका का मुख्य साधन कृषि पर आधारित है। लोंगों का पेट पालने के अतिरिक्त देश के उद्योग-धन्धों को कच्चा माल कृषि से ही मिलता है। कीमतों की स्थिरता भी कृषि के विकास पर निर्भर करती है। कृषि ही गहराई के साथ सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करती है। देश की आजादी बाद गठित सरकार के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का उद्बोधन है कि 'कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता की जरूरत है, सरकार और देश दोनों ही असफल होंगे यदि कृषि सफल नहीं होगी।'[1]

अध्ययन का उद्देश्यः

आजादी के बाद भारतीय कृषि ने एक लंबा सफर तय किया है। कृषि में तकनीक और बाजार का प्रवेश हुआ है। अधिसंख्य भारतीय जन की आजीविका कृषि पर निर्भर है। विकास और कृषि को लेकर जिज्ञासाओं के समाधान के संदर्भ में अध्ययन के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैंः

- भारत के समग्र विकास और कृषि का अंतर्सम्बंध
- सतत विकास में कृषि की भूमिका

शोध विधिः

इस अध्ययन में विश्लेषणात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया है। यह द्वितीयक सामग्री पर आधारित अनुसंधान पत्र है। शोध समस्या के अध्ययन के लिए भारत के समग्र विकास में कृषि की भूमिका से सम्बंधित पुस्तकों, अनुसंधान-पत्रों, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री का पुनरावलोकन किया गया है।

भारत के समग्र विकास में कृषि की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययनः

कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। इसी को दृष्टिगत रखकर पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि को प्राथमिकता प्रदान की गयी। 'प्रथम पंचवर्षीय योजना में खेती और सिंचाई के लिए कुल योजना खर्च का 31 प्रतिशत आवंटित था। बाद की योजनाओं में भी 20 से 24 प्रतिशत व्यय किया गया।'[2] इन योजनाओं के द्वारा संस्थागत सुधारों के साथ-साथ आधुनिक कृषि का वैज्ञानिक और तकनीकी आधार बना। गहन अध्ययन एवं मंथन के उपरान्त कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने के उद्देश्य से हरित क्रांति की आधारशिला रखी गयी। गेहूं और अन्य अनाज की खेती के लिए उन्नत बीज की शुरूआत ने बहुत ही उत्तम परिणाम दिए हैं। भारतीय कृषि के मूल कारकों यथा वित्त, अकाल, और सिंचाई के तरीकों व अन्य

कारकों पर भी मंथन करके नए उपाय विकसित किए गए। इन प्रयासों के फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था को बल मिला है अर्थात विकास को गति मिली है।

आजादी के बाद पिछले सात दशकों में भारत ने कृषि, औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र में काफी प्रगति की है परन्तु आज भी कृषि 65 फीसदी लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रही है। कृषि और सह-संबंधित प्रबन्धन व विपणन का जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) में लगभग एक चौथाई का योगदान है जो कि सबसे बड़ा एकल योगदान है। कृषि उद्योगों के एक बड़े वर्ग के लिए कच्चे माल प्रदान करता है। चीनी, चाय, कपास-कपड़ा, जूट के सामान, वनस्पति तेल, आदि उद्योगों को मूलतः कृषि उत्पादन पर ही निर्भर रहना पड़ता है। पशु-पालन व कई कुटीर धन्धे भी कृषि कार्यों पर निर्भर करते हैं। देश की विदेशी मुद्रा (विदेशी मुद्रा आरक्षित) में कृषि का योगदान भी काफी महत्वपूर्ण है। 'भारत के निर्यात के कुल मूल्य का लगभग 18 प्रतिशत हिस्सेदारी कृषि के जरिए होती है। कृषि विकास का गरीबी उन्मूलन पर सीधा प्रभाव पड़ता है।'[3]

विकास से अभिप्राय ऐसी प्रगति या परिवर्तन से है जो तेजी से किसी देश और उसके वासियों को गरीबी से मुक्ति दिलाकर एक गतिशील आर्थिक समृद्धि की स्थिति में लाता है, जिससे भलीभांति जनशक्ति का सदुपयोग होता है और समाज में समरसता भी स्थापित होती है। इस प्रक्रिया में कृषि की निर्णायक भूमिका होती है। कृषि विकास से निर्धनता, बेरोजगारी एवं असमानता के उन्मूलन में कारगार मदद मिलती है और सतत विकास की राह बनती है। कृषि विकास के द्वारा ही सतत विकास की नींव पड़ती है जिससे भावी पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना सभी के लिए जीवनयापन का एक सभ्य मानक पूरित होता है। ध्यातव्य है कि विकास एक सापेक्ष शब्द है जो वक्त व समाज के साथ बदलता रहता है। आजादी के तुरन्त बाद विकास का मतलब देश के जन-जन को रोटी, कपड़ा और मकान की उपलब्धता थी। लेकिन आज विकास के मायने बदल चुके हैं, इसमें उच्च जीवन-स्तर, उच्च उत्पादन दर, निम्न जनसंख्या वृद्धि दर, औद्योगीकरण व गैर कृषि कार्यों की प्रधानता, बेरोजगारी की निम्न दर, समानता, साक्षरता आदि सम्मिलित हैं।

कृषि के बारे में जन धारणा बहुत ही संकुचित है, आज भी खेती-किसानी शब्द के आते ही गांव का चित्र उभरता है जहां मूलभूत सुविधाओं का अभाव है, लोग भौतिक सुख-सुविधाओं से वंचित हैं और विकास के मानक और कारक वहां से कोसों दूर हैं। आधारभूत संरचना को ही लीजिए: उद्योग-धन्धे, ऊर्जा, परिवहन, सूचना, बैंकिंग आदि जैसी आर्थिक आधारभूत संरचनाएं नगरों में व्यापक स्तर पर हैं वहीं ग्रामीण इलाकों में न्यूनतम हैं। यही स्थिति सामाजिक आधारभूत संरचनाओं जैसे पेयजल, आवास, साफ-सफाई, शिक्षा आदि की भी है। कृषि व्यवसाय के प्रति सकारात्मक एवं उत्साहवर्धक दृष्टिकोण की जरूरत है।

हरित क्रांति ने देश के घरेलू खाद्यान्न उत्पादन में तेजी से बढ़ोत्तरी की है तथा कृषि और सम्बद्ध उद्योगों की प्रगति में काफी योगदान दिया है। 'हरित क्रांति अभियान के मुख्य फोकस क्षेत्र थे (1) खेत की उत्पादकता बढ़ाने के लिए मवेशियों के उपयोग को कम करके आधुनिक ट्रैक्टरों और अन्य मशीनरी के साथ कृषि कार्य का मशीनीकरण, (2) बेहतर उपज के लिए संकर किस्मों के बीजों का उपयोग, और (3) स्वतंत्रता के बाद बनाए गए नए बांधों का सिंचाई के लिए बेहतर उपयोग। इसने भारत को एक खाद्यान्न कमी वाले देश से एक खाद्यान्न बहुलता वाले देश में बदल दिया। भारत ने पिछले कई दशकों में खाद्यान्न के उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल की है जो हमारे कृषि क्षेत्र के साथ-साथ समग्र अर्थव्यवस्था के लिए एक विशाल उपलब्धि है। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक देश है और चावल उत्पादन में चीन के बाद उसका दूसरा स्थान है। भारत गेहूं उत्पादन का भी दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है जिसकी 2020 में दुनिया के कुल उत्पादन में लगभग 14.14 प्रतिशत की हिस्सेदारी थी। भारत दलहन उत्पादन में भी धीरे-धीरे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। कृषि उत्पादन के चैथे अग्रिम अनुमानों के अनुसार, देश में खाद्यान्न का उत्पादन 315.72 मिलियन टन होने का अनुमान है जो 2020-21 में हुए खाद्यान्न

के उत्पादन से 4.98 मिलियन टन अधिक है। यह गौरतलब है कि हमारे किसानों ने सदी की सबसे घातक महामारी के दौरान रिकॉर्ड खाद्यान्न पैदा किया, जबकि पूरी दुनिया कोविड-19 के प्रभाव में लड़खड़ा रही थी।'[4]

किसानों की मानसून पर निर्भरता, और जलवायु परिवर्तन के चलते कृषि उत्पादन में जोखिम और अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है। समुचित मूल्य, विपणन, संरक्षण आदि कई समस्याएं हैं जिनके समाधान की जरूरत है। खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण रोजगार और पर्यावरण तकनीक, मृदा संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनो का प्रबंधन आदि पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। कृषि से संबंधित उत्पादों, मशीनरी, अनुसंधान, नीतियों, योजनाओं, कृषि ऋण, कृषि उत्पादों के बाजार मूल्य, पशुपालन, मत्स्य पालन, बागवानी, ऋण एवं उधार, रेशम उत्पादन इत्यादि से सम्बद्ध समस्याओं के निराकरण की आवश्यकता है जिससे कि भारत की कृषि अपने लक्ष्यों को पूरित कर सके।

कृषि से सम्बंधित समस्याओं के निराकरण के लिए भारत सरकार ने कई प्रभावी कदम उठाए हैं। देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और भारतीय अर्थव्यवस्था में भूमिगत जल महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 1960 के दशक में हरित क्रांति की शुरूआत के दौरान भूमिगत जल के प्रयोग में महत्वपूर्ण वृद्धि शुरू हुई, जो अब तक जारी है जिसके फलस्वरूप जलस्तर घटने, खेतों में कुओं की कमी और सिंचाई स्रोतों की दीर्घकालिकता में ह्रास के रूप में पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ा। इसके अलावा देश में कई जगहों पर प्राकृतिक गुण और मानवोद्भव कारणों से सम्पर्क प्रभाव के कारण भूमिगत जल पीने योग्य नहीं रहा। भू-जल की गुणवत्ता में गिरावट और उत्पादक जलभृत क्षेत्रों में संतृप्ति में कमी के दोहरे खतरों से निपटने और विभिन्न हितधारकों के बीच व्यापक विचार-विमर्श के माध्यम से बेहतर भू-जल प्रशासन और प्रबंधन हेतु रणनीति तैयार करने के लिए, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा के कायाकल्प के लिए मंत्रालय ने 2015-16 के दौरान जल क्रांति अभियान शुरू किया है।'[5]

दिनांकः 3 जनवरी 2016 को 103वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'प्रौद्योगिकी विजन दस्तावेज 2035' का अनावरण किया। 'यह वर्ष 2035 में उपलब्ध होने वाली प्रौद्योगिकियों का उल्लेख मात्र नहीं है बल्कि एक विजन है, जिसके तहत हमारे देश के नागरिक वर्ष 2035 में किस प्रकार प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल करेंगे, इसका ब्योरा भी है। विजन दस्तावेज में 12 चिन्हित क्षेत्र हैंः शिक्षा, चिकित्सा विज्ञान एवं स्वास्थ्य सेवा, खाद्य एवं कृषि, जल, ऊर्जा, पर्यावरण, आवास, यातायात, बुनियादी ढांचा, निर्माण, सामग्री, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी।'[6]

निम्न उत्पादकता की समस्या को दूर करने के लिए वर्ष 2015 में अंतर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष मनाया गया था। 'भारत के हर खेत की पोषण स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए इसी वर्ष मृदा स्वास्थ्य कार्ड कार्यक्रम शुरू किया गया। इस योजना का लक्ष्य देश के किसानों को हर दो वर्ष में मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी करना है, ताकि खाद इत्यादि के बारे में मिट्टी के पोषण की कमियों को दूर किया जा सके। मिट्टी की जांच करने से खेती के खर्च में कमी आती है, क्योंकि जांच के बाद सही मात्रा में उर्वरक दिए जाते हैं। इस तरह उपज के बढ़ने से किसानों की आय में भी इजाफा होता है और बेहतर खेती संभव हो पाती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 19 फरवरी, 2015 को राजस्थान के सूरतगढ़ में शुरू किया था। यह योजना देश के किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान करने के लिए राज्य सरकारों को मदद देती है। इस कार्ड में मिट्टी की पोषण स्थिति और उसके उपजाऊपन की जानकारी सहित उर्वरक तथा अन्य पोषक तत्वों के बारे में सूचनाएं मौजूद होती हैं।'[7] यह कार्ड किसानों को उसकी मिट्टी में पोषकता की कमी एवं उर्वरक के उपयोग से संबंधित अनुमान प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा।

जैविक खेती पर अपने फोकस के साथ सरकार ने परंपरागत कृषि विकास योजना की शुरुआत की है, जो क्लस्टर खेती को प्रोत्साहित करता है। 'सरकार ने राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए), एकीकृत बागवानी विकास मिशन

(एमआईडीएच), राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) जैसी विभिन्न केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं के तहत देश में जैविक खेती को अपनाने के लिए राज्य सरकारों के माध्यम से व्यक्तिगत रूप से किसानों को वित्तीय सहायता का प्रावधान किया है।'[8] भारत की कृषि का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा प्रति वर्ष पर्याप्त एवं सही समय पर वर्षा होने पर निर्भर है और हाल के सूखों ने खेती के लिए सिंचाई की सुविधा बढ़ाने की जरूरत पर और ज्यादा बल दिया है। इसी के मद्देनजर सरकार ने वर्ष 2015 प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की शुरुआत की, जिसका लक्ष्य अधिक से अधिक हेक्टेयर जमीन को सिंचाई के अंतर्गत लाना है। 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के लिए 2015-16 में लगभग 5300 करोड़ का बजट आवंटन किया गया जिसमें त्वरित एकीकृत लाभ कार्यक्रम के लिए कोष शामिल है। कृषि मंत्रालय का कहना है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत ड्रिप एवं छिड़काव परियोजना के तहत लगभग 1.55 लाख हेक्टेयर क्षेत्र शामिल कर लिए गए हैं।'[9]

हाल ही में सरकार ने नई फसल बीमा की घोषणा की है जिसके नए प्रावधानों से संभावना है कि बेहद कम प्रीमियम पर आपात स्थितियों में कृषकों को राहत मिलेगी। बाजारों से संवेदनशील जानकारियां किसानों को उनकी उपज के लिए बेहतर मूल्य दिलाने में सहायक हो सकती हैं। इसके लिए सरकार एक राष्ट्रीय कृषि बाजार की स्थापना करने की योजना बना रही है, जो किसानों को ई-मार्केटिंग के जरिए किसी भी बाजार में उनकी उपज को बेचने में सक्षम बनाएगा। मंत्रालय ने किसानों को अधिकार संपन्न बनाने के लिए कई मोबाईल एप्लीकेशन लांच किए हैं। फसल बीमा एप्लीकेशन किसानों को बीमा कवर एवं उन पर लागू होने वाली प्रीमियम के बारे में जानकारी देने में मददगार होगा। 'एग्रीमार्केट मोबाइल किसानों को 50 किलोमीटर की परिधि भीतर मंडी में फसलों के बाजार मूल्य को प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। परिक्षेत्रों में मोबाइल एवं कनेक्टिविटी की कमी की समस्या को दूर करने के लिए कृषि मंत्रालय ने मोबाइल प्लेटफॉर्म के जरिए अपनी सभी सेवाओं को उपलब्ध कराने का फैसला किया है। कई करोड़ किसान फसलों एवं मौसम के बारे में एसएमएस से दिशानिर्देश प्राप्त करने के लिए 'एमकिसान पोर्टल' के उपयोग के लिए मंत्रालय के साथ पंजीकृत हो चुके हैं।'[10]

आमतौर पर कृषि पत्रकारिता को केवल खेतीबाड़ी या किसानी के समाचारों की पत्रकारिता समझा जाता हैं लेकिन यह आज के परिप्रेक्ष्य में उचित नही है। 'अब कृषि शब्द का अर्थ व्यापक हो गया है। उसकी सीमाओं में खेतों की जुताई, फसलों की की बोआई, सिचाई, निराई-गुड़ाई और कटाई के अतिरिक्त किसान के समग्र जीवन की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य सुरक्षा, धार्मिक विश्वास और राजनैतिक गतिविधियों की चर्चा की सम्मिलित होती जा रही है। हमारे किसान का मुख्य व्यवसाय खेती-बाड़ी है, परंतु जनसंख्या की वृद्धि के साथ भूमि पर बढ़ते हुए भार के कारण कृषक जीवन का क्षेत्र कृषि एवं पशुपालन के अतिरिक्त अन्य कुटीर धंधों के साथ मछली, मुर्गी खरगोश, बत्तख, शूकर पालन आदि तक व्यापक होता जा रहा है। गांवों में सहकारिता और पंचायती राज की स्थापना से किसानों के राजनैतिक दायित्वों में एक नया परिवर्तन आता जा रहा है। आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रवेश से कृषि एक लाभकारी उद्योग के रूप में उभरने लगी है। बड़े-बड़े उद्योगपति भी कृषि की ओर आकृष्ट होने लगे हैं। वे बीज उद्योग और कृषि यंत्र निर्माण के माध्यम से कृषि में प्रवेश कर रहे है। दूसरी ओर सीमांत लघु किसानों और भूमिहीन खेतिहर श्रमिको का बहुत बड़ा वर्ग भारतीय कृषि और कृषि पत्रकारिता की सीमाओं को आगे बढ़ाता जा रहा है। आज ग्राम- पर्यावरण की समस्याओं ने कृषि और वानिकी का पुनः एक दूसरे में प्रवेश करा दिया है। प्रत्येक राज्य में कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना से कृषि की उच्च शिक्षा, अनुसंधान, प्रसार की दिशा में नए क्षितिजों का निर्माण तेजी से होता जा रहा है।'[11]

समग्र विकास में कृषि की भूमिका विकास अर्थशास्त्र के मुख्य सरोकारों में एक रही है। कृषि संकट के समय अर्थव्यवस्था को स्थिर करने में सहायता करती है। भारतीय अर्थव्यवस्था के हाल के विश्वव्यापी संकट से बचे रहने के कारणों में

एक हमारा कृषि सेक्टर रहा है। 'कृषि अपेक्षाकृत श्रम प्रधान कार्य है जो दुर्लभ पूँजी संसाधनों का पूरा लाभ उठाती है। यह खाद्यान्न, कृषि आधारित और अन्य उद्योगों के लिए कच्चा माल, श्रम, बचत प्रदान कर और गैर-कृषि सामान के लिए माँग उत्पन्न कर आर्थिक विकास में योगदान करती है। इसलिए ये योगदान पर्याप्त रूप में स्पष्ट करते हैं कि अपने ऑफ फार्म (off farm) और ऑन फार्म (on farm) दोनों के विकास में योगदान के कारण समग्र आर्थिक विकास के लिए कृषि विकास महत्त्वपूर्ण है। कृषि आर्थिक मंदी की अवधि के दौरान कामगारों को सुरक्षा नेट प्रदान कर आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए, हाल ही के विश्वव्यापी आर्थिक और वित्तीय संकट के दौरान बहुत से कामगारों को अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ा। यह देखा गया है कि बहुत से ग्रामीण प्रवासी कामगार जो ऐसे समय में बेरोजगार होते हैं अस्थायी रूप से अपने गांवों में वापस चले जाते हैं। ऐसे कामगारों को कृषि कुछ सुरक्षा प्रदान करती है, क्योंकि वे अपने परिवारों से भोजन और आश्रय के रूप में सहायता प्राप्त करते हैं। समावेशी संवृद्धि प्राप्त करने के लिए कृषि विकास सबसे अधिक उत्कृष्ट है। श्रम प्रधान होने के कारण कृषि संवृद्धि निम्न प्रवेश बाधाओं (low entry barrier) से अतिरिक्त रोज़गार पैदा करता है।'[12] बढ़ी हुई कृषि उत्पादकता ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में गरीबों के लिए खाद्य कीमतें भी घटाती है जो अपनी अधिकांश आय खाद्य पर व्यय करते हैं।

कृषि क्षेत्र में प्रगति के बावजूद चिंता का विषय यह है कि बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण की वजह से कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल दिनोंदिन घटता जा रहा है तो दूसरी तरफ किसानों की मानसून पर निर्भरता और जलवायु परिवर्तन के चलते कृषि उत्पादन में जोखिम और अनिश्चितता बनी रहती है। आत्मनिर्भर भारत की यात्रा में किसानों और कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। सरकार एवं समाज के समेकित प्रयास से किसानों के उत्थान, सशक्तिकरण और स्थिरता के लिए प्रयोजनपरक कदम उठाए जा रहे हैं और वह समय दूर नहीं जब लगातार पहल और निवेश से कृषि क्षेत्र का चेहरा और चमकेगा। कृषि दो तिहाई जनसंख्या का मूलाधार है अतः कृषि के विकास से ही राष्ट्र के समग्र विकास की संकल्पना को साकार किया जा सकता है।

संदर्भ स्रोतः

1. http://www.economicsdiscussion.net/essays/essay-on-agriculture-and-its-significance/2266
2. **चंद्र, विपिन, आजादी के बाद का भारत, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्याालय, दिल्ली, पृ**0 541I
3. http://www.importantindia.com/12603/agriculture-is-the-backbone-of-indian-economy/
4. https://pib.gov.in/FeaturesDeatils.aspx?NoteId=151191&ModuleId%20=%202
5. https://www.aryavarttimes.com/religious/religion-news/ground-water-jal-kranti-abhiyan.html
6. https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=134127
7. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1603433
8. https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=112716
9. https://rojgarsamachar.gov.in/vol.%2042,%202015%20webexcl22jan16.pdf
10. https://mkisan.gov.in/Home/About

11. पाराशर एवं पाराशर, कृषि पत्रकारिता का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ0 04-05।
12. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/21962/1/Unit-7.pdf

डॉ. राजेश सिंह कुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर, भारतीय जन संचार संस्थान पश्चिम क्षेत्रीय परिसर, अमरावती.